

मार्क्सवादी इतिहासलेखन (Marxist Historiography)

♦ 1. परिचय

मार्क्सवादी इतिहासलेखन का आधार कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स के विचार हैं। यह इतिहास को “वर्ग संघर्ष” (Class Struggle) और “उत्पादन के साधनों” (Means of Production) के दृष्टिकोण से देखता है।

♦ 2. मुख्य सिद्धांत

आर्थिक आधार समाज का ढांचा निर्धारित करता है।

इतिहास का प्रत्येक युग शासक वर्ग और शोषित वर्ग के संघर्ष का परिणाम है।

“इतिहास” का अर्थ – समाज की भौतिक परिस्थितियों का परिवर्तन।

♦ 3. प्रमुख इतिहासकार

E. P. Thompson – The Making of the English Working Class

Eric Hobsbawm – Age of Revolution श्रृंखला

D. D. Kosambi, R. S. Sharma, Irfan Habib – भारतीय संदर्भ में

♦ 4. महत्व

मार्क्सवादी दृष्टिकोण ने इतिहास को आर्थिक और सामाजिक यथार्थ से जोड़ा। इससे किसानों, मजदूरों और निम्न वर्गों के इतिहास का अध्ययन संभव हुआ।

♦ 5. आलोचना

कुछ इतिहासकारों ने कहा कि यह दृष्टि अत्यधिक आर्थिक निर्धारणवादी है और सांस्कृतिक पक्ष की उपेक्षा करती है।

ई-नोट 3 : राष्ट्रवादी इतिहासलेखन (Nationalist Historiography in India)

♦ 1. पृष्ठभूमि

ब्रिटिश उपनिवेश काल में भारतीय इतिहास को औपनिवेशिक दृष्टि से लिखा गया —

भारतीयों को “असंगठित” और “असभ्य” बताया गया।
इस प्रतिक्रिया में उभरा राष्ट्रवादी इतिहासलेखन, जिसने भारत के गौरवशाली अतीत को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया।

- ♦ 2. प्रमुख इतिहासकार

के. पी. जयसवाल – Hindu Polity

आर. सी. मजूमदार, हरप्रसाद शास्त्री, सूर्यकांत शास्त्री

विनायक दामोदर सावरकर – 1857: The War of Independence

- ♦ 3. विशेषताएँ

भारतीय सभ्यता की सांस्कृतिक एकता पर बल।

विदेशी आक्रमणों के विरुद्ध राष्ट्रीय प्रतिरोध को गौरवपूर्ण रूप में दिखाना।

इतिहास को राष्ट्रनिर्माण के उपकरण के रूप में देखना।

- ♦ 4. आलोचना

राष्ट्रवादी इतिहासलेखन में कभी-कभी भावनात्मकता और अतिशयोक्ति देखी जाती है।
फिर भी, इसने भारतीय इतिहास की राष्ट्रीय चेतना को जगाया।